अप्रैल 2025, मूल्य : 40

पूरबी

सृजन की उड़ान

कुछ होगा कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा
ना टूटे तिलिस्म सत्ता का
मेरे अंदर एक कायर टूटेगा
मेरा मन टूट एक बार सही तरह
अच्छी तरह टूट, झूठमुठ ऊब मत रुठ
मत डूब सिर्फ टूट।

–रघुवीर सहाय

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : मार्टिन जॉन, अनुभूति, आस्था

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

वर्ष : 17, अंक 7, अप्रैल, 2025

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

वह सुब्ह कभी तो आएगी 4

कहानियां

रंग-ए-क़हर : मार्टिन जॉन 6
वो जीत थी या हार : नीरजा हेमेंद्र 14
एक प्रोफेसर की डायरी से : रोशनी रावत 20
भाईजी जा रहे हैं : अनामिका प्रिया 26
भंवर जाल : विद्या भूषण 30
एकरंगी : ट्विंकल तोमर 34
आवारा भंवरा और कागजी तासीर वाला फूल: नीरज नीर 38

कविताएं

खुर्शीद अकरम 42
अशोक कुमार 44
रेखा शेखावत 46
राजकुमार कुम्भज 48
गोलेंद्र पटेल 50
संजय चतुर्वेदी 52

मूल्यांकन

नए रास्तों की तलाश में जुटी कविताएं : रमेश शर्मा 53
प्रकृति से जोड़ती कविताएं : कुमारी उर्वशी 56
जीवन से जूझते जन की कथा : अंजन कुमार 59
काव्य परंपरा का अवां-गार्द : सुशील कुमार 62

साक्षत्कार

कोई भी आलोचक किसी पत्थर को कवि नही बना सकता : हारून रशीद खान 67

संस्मरण

स्मृतियों में सिनेमा : कविता विकास 77

स्थाई स्तंभ

मतभेद

राहुल के बढ़ते कदम : मदन कश्यप 80

कल्पित कथन

कविता की साखी और महात्मा बुद्ध के विचार : कृष्ण कल्पित 81

सत्याग्रह

अब भाषा बनेगी उन्मादी राजनीति का हथियार : प्रियदर्शन 85

कथा-मीमांसा

असाधारण चरित्रों की निर्मिति-2 : पंकज शर्मा 87

प्रति संसार

सोशल मीडिया में वायरल होता हिंदी साहित्य : अर्पण कुमार 91

द पर्पल पॉइंट

ऑस्कर वाइल्ड के फूल : शोभा अक्षर 94

वह सुब्ह कभी तो आएगी

वह सुब्ह कभी तो आएगी
वह सुब्ह कभी तो आएगी
धरती की सुलगती छाती पर
जब बूंद बरसकर आएगी
जब अंबर झूम के नाचेगा
जब धरती नग्में गाएगी
वह सुब्ह कभी तो आएगी

–साहिर लुधियानवी

1 फरवरी, 2025 की सुबह उन सभी के लिए भारी थी जो भारतीय लोकतंत्र को सिसकते हुए दम तोड़ता देख पाने की दृष्टि रखते हैं। ऐसे सभी यह भी भली भांति देख और समझ पा रहे हैं कि इस लोकतंत्र की न्याय व्यवस्था भी दम तोड़ रही है। अंग्रेजी में एक कहावत है–''When democracy starts to die, its first victims are truth and justice. A decaying judiciary does not just fail the people, it betrays them.'' 1 फरवरी की सुबह जाकिया जाफरी के निधन की खबर लेकर आई। मैं नहीं जानता कितनों को उनके ना रहने के समाचार ने उद्देलित किया होगा। यह भी नहीं जानता कि कितनों को पता भी है कि वह नहीं रहीं। इस पर भी मुझे संशय है कि 140 करोड़ भारतीयों में से कितनों ने जाकिया जाफरी की बाबत सुना होगा लेकिन संभवत एक प्रतिशत अवश्य ऐसे होंगे जिन्हें उनकी कहानी पता होगी और इन एक प्रतिशत के पचास प्रतिशत जरूर ऐसे होंगे जिन्हें उनके ना रहने पर वह सब कुछ याद हो आया होगा जिसे भुला दिए जाने, झूठ साबित करने का पूरा प्रयास बीते 23 बरसों के दौरान होते हमने देखा है। किसी भी जागृत, लोकतांत्रिक समाज की सबसे बड़ी पहचान उसके आम नागरिक होते हैं। समाज की सेहत उनके कार्यों से, उनकी समझ से समझी जा सकती है। यदि आम आदमी जागृत होगा तो लोकतंत्र फलेगा-फूलेगा। ब्रिटिश राजनेता विन्सटन चर्चिल का कहा याद आ रहा है। चर्चिल के अनुसार–'The best argument against democracy is a five minute conversation with the average voter' (लोकतंत्र के खिलाफ सबसे अच्छा तर्क एक आम मतदाता के साथ सिर्फ पांच मिनट की बातचीत है।) जाकिया जाफरी की मृत्यु का समाचार यदि इस देश के आम आदमी को कुछ याद नहीं दिलाता, व्यथित नहीं करता, उद्देलित नहीं करता तो समझ लीजिए हमारा लोकतंत्र दम तोड़ने के कगार पर आ पहुंचा है। जाकिया आम औरत नहीं थीं। वो प्रतिरोध की शक्ति पुंज थीं। प्रतिरोध उस ताकत के खिलाफ जिसने इस देश की बहुसंख्यक आबादी को इस हद तक, इस कदर अपने सम्मोहन जाल में जकड़ लिया है कि सिसकते लोकतंत्र का क्रंदन वही नहीं सुनने को तैयार जिसका अस्तित्व इस रोते-सिसकते लोकतंत्र के रहने-न रहने से सीधा जुड़ता है। जाकिया जाफरी नाम है उस प्रतिरोध के स्वर का जो लगभग बाइस बरस तक पूरी व्यवस्था के खिलाफ लड़ता रहा। व्यवस्था इतनी क्रूर कि बीस बरस की लड़ाई का नतीजा सिफर रहा। हर वह दरवाजा जिसे जाकिया ने न्याय की आस में खटखटाया, बंद मिला। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, अंतिम क्षण, अंतिम सांस तक लड़ीं। यह जज्बा ही वह आस है जो उम्मीद को जिंदा रखने की ताकत बनता है कि वह सुबह कभी तो आएगी।

कांग्रेस नेता और पूर्व सांसद एहसान जाफरी 2002 के गुजरात दंगों में हिंसक हिंदुओं की भीड़ के हाथों मारे गए थे। अहमदाबाद की गुलबर्ग सोसाइटी में हुए नरसंहार में मारे गए 69 लोगों में वे भी शामिल थे। एहसान जाफरी गुजरात के एक प्रतिष्ठित राजनेता थे। गुलबर्ग सोसाइटी मुस्लिम बाहुल्य थी। गोधरा ट्रेन हादसे के बाद पूरे गुजरात में जो सांप्रदायिक हिंसा भड़की, गुलबर्ग सोसाइटी भी उससे अछूती नहीं रही। एहसान जाफरी ने अहमदाबाद के पुलिस कमिश्नर से मदद की गुहार लगाई। कमिश्नर ने पूर्व सांसद को मदद का भरोसा दिलाया लेकिन मदद भेजी नहीं। जाफरी साहब ने एक-एक कर हर महत्वपूर्ण व्यक्ति को फोन कर मदद मांगी, यहां तक कि उन्होंने गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान में मुल्क के 'साहिब-ए-मसनद' नरेंद्र मोदी से भी सीधे बात की। इस बातचीत के कई गवाह हैं। मदद का आश्वासन मिला, मदद नहीं। हताश जाफरी साहब ने खुद को हिंसक भीड़ के हवाले कर दिया, इस दरख्वास्त के साथ कि मेरे